श्री रणवीर-केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठम्

काश्मीर-शैवदर्शन-विभाग:

प्रवेश संख्या 37--- विषय : शैवदर्शनम् क्रम सं. -17---

नाम -स्पन्दसन्दोह:---- ग्रन्थकार नाम ------------

पत्र सं. 15--- अक्षर सं. (पंक्तौ) शब्द ---5-- पंक्ति सं. (पृष्ठे)--13--

आकार: 4"x6·75"---- लिपि: -शारदा- आधार: --कागज---

वि. विवरणम् -पू.---------

पर्यवेक्षक :------------ दिनांक: 16-9-2000

No 39

66.

M.K. [illegible]

सं० ९७

ॐ नमो भगवते [illegible] ॥

सकलितमहिमा यः [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ॐ शङ्करं नमः । [illegible]

[illegible], विकल्प

[illegible] विकल्पा[illegible]

[illegible]

[illegible] । [illegible]

[illegible]

[illegible] । [illegible]

[illegible] । [illegible]

[illegible] शङ्करं स्तुमः । यस्येति [illegible]-

[illegible]

[illegible] उन्मेषनिमेषाभ्यां जगतो

स्प॰ [illegible] प्रलयोदयौ [illegible]

म॰ इति [illegible] । [illegible]

१ [illegible], [illegible] उन्मेषनिमेषौ [illegible]

[illegible]-

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अंविरकलमयी

सिद्धमियमेकैव विभक्तिः विभक्त

कुमि स्कन्धपविमधमयु स्कन्धपविम

ध सप्तद्वयोः तथा प्रतीयते। ततः स्कन्धे

स विमध्ये सति विगृह्य स्कन्धपसुमि

मधमयसु विमधसु सोऽस्कन्धमयसु

प्रत्येकं ततः विभक्तसु पर्याप्त

मत्वाभिवं तुं स्वगतप्रत्ययेस्य कृत

तं वृत्ता प्रतत्वं। एवं स प्रत्यये स

स्ये सति विगृह्य प्रत्ययस्यावि

ति वृत्ता प्रतत्वं मा। तपणीकृतीलत्वः

प्रत्ययेस्य कृतत्वमेव

ये वस्ती प्रकृत्यां तस्य। भूएव

उमय:

कृत प्रकृत्याः प्रत्ययः। एवं ये वस्ती

प्रकृत्याः प्रत्ययः। मा एवं कृत

प्रकृत्याः तस्यैति प्रत्ययेपूर्व

यप्रकृत्यैव तस्येपि प्रत्ययपा

मकृ कारकः प्रत्येकं ततः नत

मत्तृ विवक्षः।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible] || 𑆅𑆠𑆴 [illegible]
𑆱𑆩𑆳𑆥𑇀𑆠𑆂 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆱𑆢𑆳𑆯𑆴𑆮𑆳𑆫𑇀𑆥𑆟𑆩𑆱𑇀𑆠𑆶 𑇆